

कबाड़-मुक्त जीवन : एक आचरण और प्रक्रिया

हमारे दादा-दादी की पीढ़ी में कबाड़ नाम की कोई चीज होती नहीं थी। प्रकृति में भी किसी का कचरा किसी और का खाना होता है। सिर्फ पिछले 20 साल से यह 'भोगो-फेंको' संस्कृति शुरू हुई है। इसके दुष्प्रभाव हम सबके सामने हैं। लेकिन इस संस्कृति को बदलने और प्रकृति के साथ जुड़ने का समय अभी भी है। अगर आप अपनी और आने वाली पीढ़ी की सुरक्षा चाहते हैं, तो ...

आइए! कचरा-मुक्त जीवन अपनाइए!

कबाड़-मुक्त जीवन केवल कचरे के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य, खान-पान, हवा-पानी, कला आदि के साथ जुड़ा हुआ है। हम देख सकते हैं कि हम कितना पानी इस्तेमाल करते हैं? हम कितना केमिकल खा रहे हैं? हमारे वाहनों से कितना प्रदूषण हो रहा है? बनी-बनाई चीजों पर हम कितने आश्रित हैं? हमारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य कैसा है?

उदयपुर को एक कबाड़-मुक्त शहर बनाने के लिए आप सपरिवार आमन्त्रित हैं।

सम्पर्क करें :- विशाल सिंह, शिक्षान्तर, 21 फतेहपुरा फोन : 2451303

कबाड़-मुक्त जीवन

आप क्या कर सकते हैं :-

- अपने घर या कार्यालय में कचरे की छँटाई करें, जैसे -
 - प्राकृतिक कचरा (organic) - पत्ते, सब्जियों-फलों के छिलके, बासी खाना ...।
 - पुनःउपयोग कचरा (recyclable) - काँच, लोहा, कागज, गत्ता, मोटा प्लास्टिक आदि।
 - हानिकारक कचरा (toxic) - बैट्री, पोलिथीन, ट्यूबलाइट, बल्ब, केमिकल्स आदि।
- प्राकृतिक कचरे का खाद बनाना या जानवरों को खिलाना।
- पुनः उपयोग कचरे को कबाड़ी को बेचना या उससे जुगाड़ करना।
- हानिकारक कचरे के विकल्प खोजें, ऐसे कचरा-निर्माताओं पर प्रश्न उठाएँ और उनको इस कचरे को ठिकाने लगाने के लिए जिम्मेदार ठहराएँ।
- अपने मोहल्ले में कचरे को जलाने, गाड़ने या फैलाने का विरोध करें।
- अपनी खरीददारी के लिए कपड़े की थैली का इस्तेमाल करें व पैकिंग की मनाही करें।
- जान-पहचान वाले लोगों के साथ या दुकानों पर प्लास्टिक का विरोध करें और उनको कागज-कपड़े की थैलियों के लिए सुझाव दें।
- कबाड़ से जुगाड़ की कार्यशालाएँ आयोजित करें।
- पाउच संस्कृति को बन्द करें और 'भोगो-फेंको' (use and throw) मानसिकता को बदलें। ऐसी चीजें खरीदें, जो टिकाऊ हो।
- रेडिमेड चीजों को कम करते हुए खुद के उपयोग की चीजें अपने हाथों से बनाएँ।